5. श्री चन्द्रभूषण त्रिवेदी ने अपने शोध ग्रन्थ 'दशपुर' के पृष्ठ संख्या 120 पर लिखा है कि, "कालान्तर में दशपुर का अपभ्रंश नाम 'दशोर' प्रचलित रहा। यहाँ के ब्राह्मण 'दसोरा' कहलाते है।

6. उदयपुर के महाराणा फतहसिंह जी ने सभी जातियों की तहकीकात कराई थी जिसमें दशोरा जाति की भी तहकिकात कराई गई थी जिसमें सभी दशोरों ने अपने को प्रश्नोरा नागर ही लिखा है। यह तहकीकात सन् 1905 ई. (आज से 100 वर्ष पूर्व) में कराई गई थी। इन्ही के आधार पर इस जाति को ब्राह्मण जाति एवं 'प्रश्नोरा नागर' स्वीकार किया गया था। इसमें भी लिखा है कि मन्दसोर में रहने वाले ब्राह्मण नागर जाति के ही थे जिनको बाद में 'दशोरा' कहा जाने लगा।

7. कोटा जंक्शन के हैड बुकिंग क्लर्क श्री लक्ष्मी नारायण ने दिंनाक 14.10.1927ई. को एक पत्र में दशोरों के 'प्रश्नोरा नागर' होने के निम्न प्रमाण दिये हैं–

   1. कोटा के आसपास 'दशोरा नागर' कहलाने वाले 'प्रश्नोरा नागर' ही हैं।
   2. मन्दसोर में रहने के कारण 'दशोरा' कहलायें।
   3. इनका भोजन व्यवहार अपनी जाति में ही होता है। दूध से पके हुए भोजन दूसरों का भी स्वीकार कर लेते हैं।
   4. ये हाटकेश्वर के उपासक है।
   5. ये दशपुर निवासी दशोरा गुजरात के काठियावाड़ के किसी गाँव के रहने वाले थे। ऐसा ताम्र पत्र में उल्लेख है।
   6. जनश्रुति के अनुसार जूनागढ़ की ब्राह्मण जाति का एक व्यक्ति जिसका नाम ज्ञात नहीं, घूमता हुआ मन्दसोर की ओर आ पहुँचा। स्नान करते समय उसकी धोती अधर में सूखती थी। इसे देखकर ग्रामवासियों ने राज दरबार में सूचित किया तो राजा ने उसे सभा में बुलाया तथा उससे बातचीत करके मन्दसोर की जागीर बख्शीस कर दी। फिर इस ब्राह्मण ने अपने सम्बन्धियों को भी बुलाकर मन्दसोर में बसा लिया।
   7. कई वर्षो बाद मोहम्मद गोरी के साथ युद्ध में कई मनुष्य मारे गये। करीब 12 गोत्र (कुटुम्ब) बचे जिनमें से अभी 10 गोत्र विद्यमान है। ये गोत्र मन्दसोर के आसपास रामपुरा, भानपुरा, झालरा पाटन, कोटा, इन्दोर, उज्जैन, खरगोन, मंडलेश्वर, महेश्वर, निमाड़ प्रान्त, उदयपुर तथा इसके आसपास अनेक गाँवों बसकर आजीविका कमाते रहे है।
   8. इसी कारण इसने मन्दसोर की नदी में पानी पीने का त्याग किया है। इसे 'दशोरा' आज भी मानते है।

9. शहाबुद्दीन मोहम्मद गोरी ने ई. सन् 1194 में कन्नोज जीता। 1196 में पाटन के आसपास तथा नागोर के राजा को हराया। इस समय ब्राह्मण प्रश्नोरा नागरों से अलग हुए।

(यह विवरण सवाई लाल गिरधर लाल पंड्या ने अपनी पुस्तक "अहिच्छत्र निर्देशिका" में दिया है।)